

नवादा जिले में रजौली प्रखंड में परिदृश्य वास्तुकला और स्थानीय योजना का अनुसंधान

Santosh Kumar

Dept. of Geography, Research Scholar, Magadh University, Bodhgaya, Bihar

ARTICLE DETAILS

Article History

Published Online: 10 December 2018

Keywords

वास्तुकला, डिजाइन, अनुसंधान

ABSTRACT

यह लेख नवादा जिले के रजौली उपखंड में परिदृश्य वास्तुकला डिजाइन के लिए एक शोध रणनीति का परिचय देता है। यह एक व्यवस्थित दृष्टिकोण का वर्णन करता है जहां डिजाइन अनुसंधान और अनुसंधान-दर-डिजाइन संयुक्त हैं। डिजाइन अनुसंधान को अनुसंधान-डिजाइन में एक अनिवार्य कदम माना जाता है। साथ में वे ज्ञान-आधारित और रचनात्मक डिजाइन के लिए एक न्यायिक दृष्टिकोण का गठन करते हैं, और इसमें योजना विश्लेषण, तुलनात्मक विश्लेषण, प्रयोगात्मक डिजाइन अध्ययन और डिजाइन अध्ययन शामिल हैं। एक साथ शोध के इन तरीकों को डिजाइन-संबंधित अनुसंधान कहा जाता है। परिदृश्य वास्तुकला में डिजाइन से संबंधित अनुसंधान के विकास को परिदृश्य के प्रारंभिक तत्वों को समझने और योजना विधियों और डिजाइन रणनीतियों के विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। इस संबंध में परिदृश्य वास्तुकला डिजाइन वास्तव में अनुसंधान के रूप में देखा जा सकता है। अनुसंधान डिजाइन प्रकृति में और कार्यकारी है। इस अनुसंधान का मुख्य भाग राजौली के परिदृश्य पर कुछ प्रकाश डालने के लिए है। प्रस्तुत अनुसंधान रणनीति संबंधित स्थानिक डिजाइन विषयों में लागू होती है जैसे कि शहरी डिजाइन और वास्तुकला, और इसलिए डिजाइन-संबंधित अनुसंधान के क्षेत्र में योगदान।

परिचय

नवादा बिहार, भारत का एक शहर और नगरपालिका है। यह नवादा जिले का मुख्यालय भी है। यह उसी नाम के उपखंड का मुख्यालय है, जो 24° 53 'एन और 85° 33' ई। में खुरी नदी (जिसे कुछ भागों में सकरी नदी के रूप में भी जाना जाता है) के दोनों ओर स्थित है। यह नाम नौवाड़ा से विकसित हुआ है, जिसका अर्थ है नया नगर। 26 जनवरी 1973 को गया से अलग जिले के रूप में नवादा का गठन किया गया।

नवादा दक्षिण बिहार के प्राचीन मगध विभाग का एक हिस्सा है। नवादा नाम की उत्पत्ति संस्कृत के नवा अवध से हुई है, जिसका अर्थ है "नया शहर" जिसे पहले 'एलियट मार्केट (बाजार)' के रूप में जाना जाता था। ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा अपने अधिग्रहण से पहले, नवादा पर हिंदुओं के लगभग स्वतंत्र राजाओं का शासन था जो मय्य कबीले के थे। इसके अधिग्रहण के बाद, नवादा 1845 तक बड़ी अव्यवस्था में था,

जब यह नव निर्मित उपखंड का मुख्यालय बन गया। 1857 के विद्रोह के दौरान फिर से अव्यवस्था के तत्व फिर से शुरू हो गए, जब नवादा का संचालन दलों द्वारा किया गया। स्थानीय कार्यालयों को नष्ट कर दिया गया था, लेकिन सरकारी रिकॉर्ड देशी अधिकारियों द्वारा बचाए गए थे जिन्होंने उन्हें एक पड़ोसी पहाड़ी पर एक गुफा में छिपा दिया था। जिले में 1857 से पहले के युग में ये एकमात्र उपलब्ध सार्वजनिक रिकॉर्ड हैं। उत्तर में दो मील की दूरी पर, सार्वजनिक मार्ग के पश्चिम में एक बड़े टैंक के बीच में एक जैन मंदिर खड़ा है, लेकिन शहर में ही कोई महत्वपूर्ण इमारत नहीं है और बहुत कम ऐतिहासिक रुचि है। शहर में गांधी जी द्वारा स्थापित देश के दो सत्याग्रह आश्रमों में से एक है। यह जैन धर्म में भगवान महावीर के प्रमुख शिष्य इंद्रभूति गौतम का जन्मस्थान और कार्यस्थल भी था। आधुनिक शहर नालंदा विश्वविद्यालय से केवल 40 किलोमीटर दूर है, जो दुनिया का सबसे पुराना विश्वविद्यालय है।

हाल के वर्षों में 'रिसर्च-बाय-डिजाइन' स्थानिक योजना, शहरी डिजाइन और परिदृश्य वास्तुकला के विषयों में अक्सर इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। यह आमतौर पर स्थानिक डिजाइन में एक विशेष शोध पद्धति या अनुमानी (जानने का तरीका) को संदर्भित करता है। केंद्रीय स्थिति यह है कि डिजाइन को अनुसंधान या सोच की संस्कृति माना जा सकता है, जैसा कि शॉन (1983), ज़िसल (2006/1981) और क्रॉस (2006) द्वारा सामने रखा गया है। हालांकि, जब डिजाइन को अनुसंधान के रूप में माना जाता है तो डिजाइन और अनुसंधान के बीच की बातचीत एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन जाती है, विशेष रूप से अंतर गिटिटी और वैधता के पहलुओं के बारे में। जैसा कि अध्ययन और शोध के लिए वीर्य संबंधी कार्य के तरीकों में बताया गया है कि अनुसंधान रणनीति में व्यवस्थित रूप से पाया जाना चाहिए जो व्यवस्थित रूप से अनुसंधान जांच और डिजाइन सोच को जोड़ती है। इसके अलावा Frascati Manual (OECD, 2002) व्यावहारिक-वैज्ञानिक अनुसंधान की अपनी परिभाषा के द्वारा इस दिशा में एक सुराग प्रदान करता है: "मूल ज्ञान नए ज्ञान प्राप्त करने के लिए किए गए [...] मुख्य रूप से एक विशिष्ट व्यावहारिक उद्देश्य या उद्देश्य के लिए निर्देशित।" इस प्रकार, परिदृश्य वास्तुशिल्प डिजाइन को व्यावहारिक-वैज्ञानिक अनुसंधान माना जा सकता है जब इसका उद्देश्य विशिष्ट व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए निर्देशित ज्ञान का व्यवस्थित अधिग्रहण करना है। इसका मतलब यह है कि अनुसंधान और डिजाइन के बीच एक संबंध है जहां अनुसंधान को क्रियात्मक ज्ञान बनाने के लिए एक गतिविधि के रूप में देखा जाता है जो डिजाइन के भौतिक, व्यवहारिक, सौंदर्य और सांस्कृतिक परिणामों की भविष्यवाणी या व्याख्या करता है। परिदृश्य वास्तुकला में अनुसंधान और डिजाइन के बीच संबंधों पर साहित्य की एक विस्तृत श्रृंखला उपलब्ध है, यह दर्शाता है कि डिजाइन-संबंधित अनुसंधान रणनीतियों, अनुसंधान और डिजाइन के संयोजन पर सुसंगत और व्यवस्थित विस्तार, परिदृश्य वास्तुकला के साथ-साथ शहरी डिजाइन में भी दुर्लभ हैं। केवल कुछ गंभीर प्रयास हैं, जैसे: स्टीनिट्ज़ (1990) ने छह-स्तरीय रूपरेखा पेश की, जो परिदृश्य डिजाइन समस्याओं से संबंधित प्रश्नों का आयोजन करती है; मिलबर्न और ब्राउन (2003) ने परिदृश्य वास्तुकला में अनुसंधान और डिजाइन के बीच संबंध के लिए सामान्य मॉडल का वर्णन किया; मिलबर्न एट अल। (2003) अनुसंधान गुणवत्ता के मानदंड प्रदान किए

गए; क्लासेन (2007) शोध-दर-डिजाइन पर एक शहरी नियोजन / डिजाइन परिप्रेक्ष्य को दर्शाता है; और नासाउर और ओपदम (2008) एक मॉडल प्रस्तुत करते हैं, जहां मौलिक अनुसंधान परिदृश्य वास्तुकला में डिजाइन दिशानिर्देशों की नींव है। यह लेख एक शोध रणनीति का परिचय देता है जो परिदृश्य वास्तुशिल्प design के लिए सुसंगत अनुसंधान दृष्टिकोण में व्यवस्थित अनुसंधान (यानी, मौजूदा डिजाइन या पूर्व-उदाहरणों का विश्लेषण) और शोध-दर-डिजाइन (यानी, डिजाइन के माध्यम से अध्ययन) को जोड़ती है। इसलिए, प्रस्तुत डिजाइन-संबंधित अनुसंधान रणनीति सामान्य है यह प्रकृति से संबंधित स्थानिक डिजाइन विषयों में भी लागू है। लेख का उद्देश्य दो तरीकों से स्थानिक डिजाइन विषयों की प्रगति में योगदान करना है:

1. यह ज्ञान-आधारित डिजाइन के लिए एक विशेष रणनीति में संयोजन करके अनुसंधान और डिजाइन के बीच के संबंध पर एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करता है
2. स्थानिक अनुसंधान और डिजाइन के बीच संबंध का मूल्यांकन करने के लिए एक व्यवस्थित ढांचा प्रदान करके। यह लेख डिजाइन आर्किटेक्चर के रूप में लैंडस्केप आर्किटेक्चर को शुरू करने के साथ शुरू होता है, जो महत्वपूर्ण उपकरणों के रूप में हस्तक्षेप और दृश्य अभ्यावेदन के विभिन्न डिग्री में संचालित होता है।

इसके बाद, अनुसंधान रणनीति को डिजाइन अनुसंधान और अनुसंधान-दर-डिजाइन के बीच व्यवस्थित संबंध पर विस्तृत रूप से पेश किया जाता है। नतीजतन, डिजाइन-संबंधित अनुसंधान के इन डोमेन, अनुसंधान के शामिल मोड और उनके संबंधों पर चर्चा की जाती है। अंत में हम डिजाइन-संबंधित अनुसंधान पर कुछ अन्य राय के प्रकाश में प्रस्तुत शोध रणनीति का मूल्यांकन करते हैं।

परिदृश्य वास्तुकला

परिदृश्य वास्तुकला, बगीचों, यार्ड, मैदान, पार्क और अन्य नियोजित हरे आउटडोर स्थानों का विकास और सजावटी रोपण। लैंडस्केप बागवानी का उपयोग प्रकृति को बढ़ाने और इमारतों, कस्बों और शहरों के लिए एक प्राकृतिक सेटिंग बनाने के लिए किया जाता है। यह सजावटी कलाओं में से एक है और इसे वास्तुकला, शहर की योजना और बागवानी के लिए संबद्ध किया गया है।

लैंडस्केप आर्किटेक्चर्स प्राकृतिक भूभाग से शुरू होते हैं और मौजूदा भू-आकृतियों को बढ़ाते हैं, फिर से बनाते हैं या बदलते हैं। "गार्डन" आमतौर पर छोटे, अधिक गहन खेती वाले क्षेत्र को दर्शाता है, जो अक्सर घरेलू इमारत या अन्य छोटे ढांचे के आसपास बनाया जाता है। "लैंडस्केप" एक बड़े क्षेत्र जैसे पार्क, शहरी क्षेत्र, परिसर या सड़क के किनारे को दर्शाता है।

पेड़, झाड़ियों, झाड़ियों, हेजेज, फूलों, घास, पानी (झीलों, नदियों, तालाबों, और कैस्केड्स), और चट्टानों का उपयोग एक मनभावन प्राकृतिक सेटिंग को बदलने या बनाने के लिए किया जाता है। डेक, छतों, प्लाज़ा, फुटपाथ, बाड़, गज़ेबोस, और फव्वारे जैसे कृत्रिम उपकरणों का भी उपयोग किया जाता है। प्राकृतिक घटकों के सापेक्ष मानव निर्मित घटकों का महत्व डिजाइनर के अनुसार भिन्न होता है, विशेष साइट के उद्देश्य और प्रचलित संस्कृति और फैशन।

गार्डन और लैंडस्केप डिजाइन शास्त्रीय / सममित और प्राकृतिक / रोमांटिक, औपचारिकता और अनौपचारिकता, उपयोगिता और आनंद और निजी और सार्वजनिक के बीच भिन्न हो सकते हैं। 18 वीं शताब्दी के इंग्लैंड में लोकप्रिय "प्राकृतिक" उद्यान के साथ टब, पौधों की टोकरी, और फ़र्श विरोधाभासों के साथ एक संलग्न आँगन उद्यान, जहाँ मानव निर्मित तत्व कम दिखाई देते थे।

एक बगीचे या परिदृश्य के सौंदर्य पहलुओं में रूप, पौधे, रंग, गंध, आकार, जलवायु और कार्य शामिल हैं। खुद को मुखर करने से खरपतवारों और अन्य अवांछित प्राकृतिक घटनाओं को रोकने के लिए उद्यान को निरंतर रखरखाव की आवश्यकता होती है। मौसम मौसम और जलवायु के साथ बदलते हैं और उनके पौधों के विकास और क्षय के चक्र के साथ।

रजौली का परिदृश्य वास्तुकला

उद्यान, यार्ड, खेतों, पार्को और अन्य इच्छित बाहरी हरे स्थानों के परिदृश्य, विकास और सजावटी रोपण की वास्तुकला। लैंडस्केप बागवानी का उपयोग प्रकृति की वृद्धि

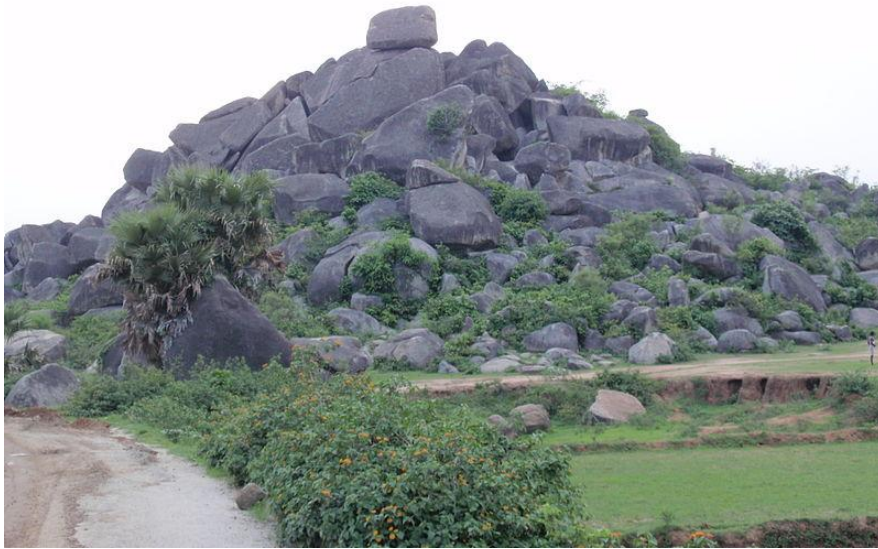
और इमारतों, कस्बों और शहरों के लिए एक प्राकृतिक वातावरण बनाने के लिए किया जाता है। राजौली का नाम पौराणिक दानव राजा बाली के नाम पर रखा गया है। वह सबसे प्रसिद्ध दानदाताओं में से एक थे। भगवान विष्णु का "वामन अवतार" बाली था। बाली वह था जिसके लिए दुनिया के सबसे बड़े दानदाता होने के अपने गौरव को तोड़ने के लिए प्रभु को पृथ्वी पर आना पड़ा।

कहा जाता है कि रजौली वह स्थान है जहाँ इस पौराणिक राजा ने वर्षों तक ध्यान किया था। सिख धर्म की वजह से रजौली का एक और महत्व है और एक शहर के केंद्र में एक विशाल किला हो सकता है जिसे 'संगात' कहा जाता है, जिसका अर्थ है "पुरुषों और महिलाओं का एक शरीर जो धार्मिक रूप से 'गुरु ग्रंथ साहिब की उपस्थिति में मिलते हैं'। इस स्थान पर, गुरु पूरब का प्रसिद्ध मेला आयोजित किया जाता है। इस मेले में कई तरह के प्रदर्शन और सिख खेल होते हैं और लोग भारी संख्या में आते हैं। बिहार नवादा के उपखंड रजौली में विभिन्न लोकप्रिय वास्तुशिल्प चीजें हैं। इस अध्ययन में सबसे लोकप्रिय वास्तुशिल्प परिदृश्यों में से कुछ का वर्णन किया गया है।

निकटतम हवाई अड्डा गया हवाई अड्डा है, जो 72 किमी दूर है।

निकटतम रेलवे स्टेशन 19 किमी दूर दिलवा में है। सीमित संख्या में यात्री ट्रेनें वहां रुकती हैं। बड़े स्टेशन कोडरमा (32 किमी दूर) और गया जंक्शन (70 किमी दूर) हैं।

राजौली NH 31 पर है और बस सेवाओं द्वारा अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। बसें पटना, गया, [कोलकाता] और रांची तक पहुँचती हैं। इस रूट की ज्यादातर बसें रजौली या छपरा में भोजन के लिए रुकती हैं। पटना और रांची के बीच यात्रा करने वाली अधिकांश बसें के लिए, राजौली एक भोजन बंद है। स्थानीय लोग अपनी साइकिल, जुगाड़, कार या ट्रैक्टर का उपयोग करके रजौली आते हैं।



चित्र 1 राजौली का हिल स्टेशन



चित्र 2 राजौली के बस स्टैंड के पास का मंदिर



चित्र 3 राजौली का सबसे पुराना पुल

राजौली के बाहरी हिस्से से जुड़ा सबसे पुराना पुल, जिसमें सिमरोल, अम्मा, पसरीला और तारगे शामिल हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के कुछ मुख्य उद्देश्य हैं जिन्हें नीचे वर्णित किया गया है:

1. यह अध्ययन परिदृश्य वास्तुकला के बारे में बताता है।
2. यह अध्ययन परिदृश्य वास्तुकला पर डिजाइन से संबंधित अनुसंधान बताता है।
3. सभी अनुसंधान भाग और अध्ययन प्रकृति में वर्णनात्मक हैं।
4. परिदृश्य वास्तुकला और स्थानिक डिजाइन प्रयोग विधि के डेटा के विश्लेषण के उद्देश्य के लिए उपयोग किया जाता है।

अनुसंधान के रूप में डिजाइन

हमारी सामग्री संस्कृति परिदृश्य वास्तुशिल्प डिजाइन की वस्तुओं के रूप में स्थानिक डिजाइन ज्ञान का एक बड़ा खजाना है। वे ज्ञान - सभी के लिए उपलब्ध हैं - कुछ आवश्यकताओं को कैसे पूरा करें और कुछ कार्यों को कैसे करें, इसके बारे में। विशेष रूप से, परिदृश्य वास्तुकला डिजाइनों का अध्ययन करके हम वैचारिक सोच और परिदृश्य के तीन आयामी पहलुओं के बीच संभावित संबंधों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। डिजाइन अनुसंधान मौजूदा डिजाइन या पूर्व उदाहरणों का विश्लेषण करने के लिए है ताकि वस्तु विशिष्ट या टाइपोलॉजिकल डिजाइन ज्ञान (तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त) प्राप्त किया जा सके। अनुसंधान के दो तरीकों को मान्यता दी जा सकती है: योजना विश्लेषण और तुलनात्मक विश्लेषण।

i. योजना विश्लेषण

योजना विश्लेषण इस तरह से एक परिदृश्य या एक परिदृश्य वास्तुशिल्प डिजाइन का विश्लेषण करने के बारे में है कि अधिग्रहित अंतर्दृष्टि का उपयोग एक डिजाइन अध्ययन में रचनात्मक रूप से किया जा सकता है। योजना विश्लेषण में एक ज्ञात संदर्भ में एक चुने हुए परिदृश्य या परिदृश्य डिजाइन की संरचना के सभी पहलुओं (या परतों) का विश्लेषण और विवरण शामिल है। न केवल इसका रूप शामिल है, बल्कि इसका कार्य और इसे बनाने का तरीका भी है। परिणामस्वरूप हम एक निर्धारित संदर्भ में एक निर्धारित वस्तु से विशिष्ट ज्ञान प्राप्त करते हैं।

ii. तुलनात्मक विश्लेषण

तुलनात्मक विश्लेषण या टाइपोलॉजिकल रिसर्च में संरचना तत्वों, संरचना योजनाओं और परिवर्तनों को अलग करने के माध्यम से रिश्तों को एक दूसरे और उनकी परिवर्तनीयता को प्रकट करने के लिए कई परिदृश्य वास्तुशिल्प डिजाइनों की तुलना शामिल है।

शोध-दर-डिजाइन

रिसर्च-बाय-डिजाइन, डिजाइन रिसर्च द्वारा अर्जित ज्ञान का उपयोग करके डिजाइन के माध्यम से अध्ययन के बारे में है। हम अनुसंधान के दो महत्वपूर्ण तरीकों की पहचान कर सकते हैं: प्रयोगात्मक डिजाइन अध्ययन और डिजाइन अध्ययन। पूर्व प्रकार और सिद्धांतों के आवेदन और परिवर्तन के बारे में है, जबकि बाद में मॉडलिंग और अभिव्यक्ति के बारे में है: वास्तविक डिजाइन अध्ययन। यहाँ प्रत्यय 'अध्ययन' का उपयोग यह इंगित करने के लिए किया जाता है कि ज्ञान एक समस्या के माध्यम से अच्छी तरह से सोचने, प्रयोगों को पूरा करने और डेटा एकत्र करने, प्रसंस्करण और विश्लेषण करने (कुछ ऐसी चीज़ की तलाश में है जो अभी तक मौजूद नहीं है) के रूप में इसकी संकीर्णता के विरोध में उत्पन्न होता है। अध्ययन के अनुभवजन्य रूप का अर्थ

1. प्रायोगिक अनुसंधान

प्रायोगिक डिजाइन के अध्ययन में ऐसे प्रयोग शामिल हैं जिनमें विशेष रूप से अन्य तत्वों से रचना तत्व या रचना योजना को अलग किया जाता है और दूसरे निर्धारित संदर्भ में रखा जाता है। प्रायोगिक डिजाइन अध्ययन एक विशिष्ट संदर्भ में सक्रिय रूप से और व्यवस्थित रूप से डिजाइन समाधान के प्रभावों का अध्ययन करके ज्ञान और समझ पैदा कर रहा है। यदि यह संदर्भ की जांच करने के लिए किया जाता है, तो हम स्थलाकृति के प्रायोगिक परिवर्तन की बात कर सकते हैं। यदि उच्चारण रचना तत्व या रचना योजना के परिवर्तन पर निहित है, तो हम प्रकार (या सिद्धांत) के प्रयोगात्मक परिवर्तन की बात करते हैं।

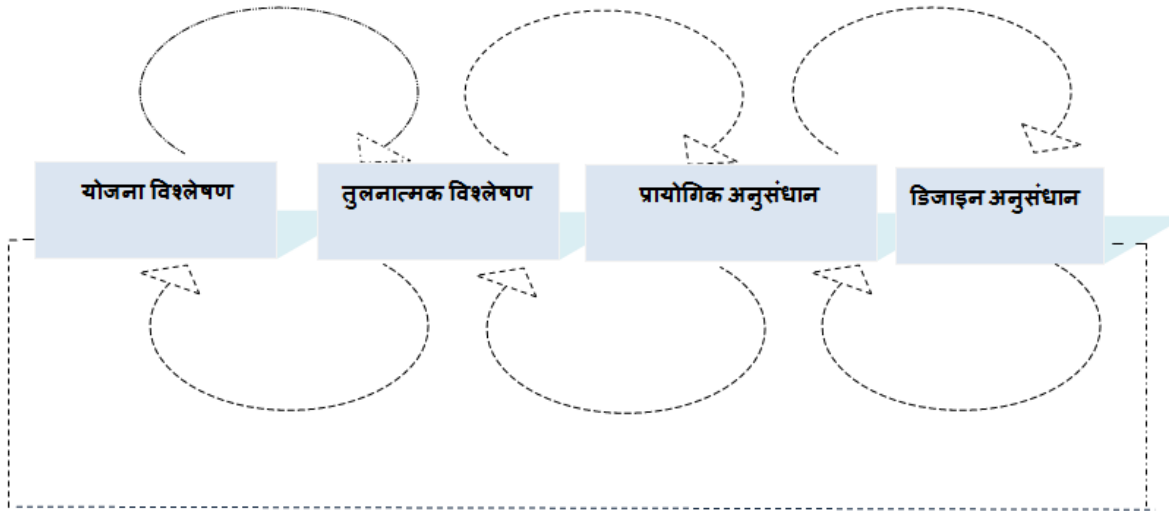
कई वास्तविक डिजाइन प्रयोगों को तैयार किया गया है जिसके माध्यम से दिए गए स्थान की जांच की जा सकती है। एक प्रायोगिक डिजाइन के अध्ययन में एक उपयुक्त मिसाल से संरचना तत्वों, या एक रचना योजना को लेना, और उन्हें जांच के तहत स्थिति में लागू करना शामिल है। इस

रचना के आंतरिक नियमों का विश्लेषण करके और उन्हें समस्या के आलोचनात्मक विचार के आधार के रूप में लेते हुए, कोई यह पता लगा सकता है कि एक नई डिज़ाइन-इन-मेकिंग अलग-अलग संभावनाओं का अध्ययन या परीक्षण करके ज्ञात मिसाल से संबंधित है।

2. डिजाइन अनुसंधान / अध्ययन (मॉडलिंग)

अंत में, डिजाइन अध्ययन एक परिदृश्य की एक नई रचना है, एक प्रस्ताव के रूप में जिसमें पद्धतिगत उपयोग डिजाइन अनुसंधान और प्रयोगात्मक डिजाइन अध्ययन से

बना है। यहां लागू (सामान्य) सिद्धांत या प्रकार जांच के तहत स्थिति के लिए विशिष्ट हो जाते हैं और अपनी विशिष्ट अभिव्यक्ति बन जाते हैं। डिजाइन अध्ययन सक्रिय रूप से और व्यवस्थित रूप से डिजाइन समाधानों और उनके संदर्भ दोनों के प्रभावों का अध्ययन करके ज्ञान और समझ पैदा कर रहा है। अंतिम लक्ष्य एक संभव और ज्ञान-आधारित डिजाइन पर आना है जिसे अभ्यास में अंतिम परीक्षण के रूप में रखा जा सकता है।



चित्र 4. वृद्धिशील और पुनरावृत्ति प्रक्रिया के रूप में डिजाइन अनुसंधान और अनुसंधान द्वारा डिजाइन

चर्चा

वर्णित दृष्टिकोण परिदृश्य वास्तुकला डिजाइन को अनुसंधान का एक रूप मानता है। यह एक व्यवस्थित और सुसंगत तरीके से अनुसंधान और डिजाइन के बीच बातचीत के लिए एक मॉडल प्रदान करता है। परिदृश्य वास्तुकला में शिक्षा के बाद से प्रस्तुत दृष्टिकोण पर विभिन्न शोध और डिजाइन बातचीत प्रतिबिंब उपयोगी है। Duchhart (2011) विभिन्न डिजाइन और शोध संयोजनों का एक उपयोगी अवलोकन प्रदान करता है जो वर्तमान में 'रिसर्च-बाय डिजाइन' के रूप में उपयोग और लेबल किए जाते हैं। हालाँकि, स्पष्टता के लिए हम डिजाइन के अनुसंधान और अनुसंधान-दर-डिजाइन के कंटेनर के रूप में लेबल 'डिजाइन-एस-रिसर्च' का उपयोग करना पसंद करते हैं, डिजाइन के माध्यम से अनुसंधान से पूर्व उदाहरणों के विशिष्ट विश्लेषण। दोनों को अनुसंधान पूछताछ और डिजाइन सोच की रणनीतियों के संयोजन का एक रूप

माना जाता है। डिजाइन-के रूप में अनुसंधान अनुसंधान और डिजाइन के बीच एक निश्चित संबंध का तात्पर्य है।

निष्कर्ष

जैसा कि हमने देखा है कि वर्णित अनुसंधान रणनीति परिदृश्य वास्तुकला में ज्ञान-आधारित डिजाइन के लिए एक ठोस आधार स्थापित करती है। डिजाइन रिसर्च और रिसर्च-बाय-डिजाइन द्वारा हासिल किए गए स्थानिक डिजाइन ज्ञान लैंडस्केप आर्किटेक्चर डिजाइन में सचेत और रचनात्मक डिजाइन के लिए मूल है। यह डिजाइन सोच के साथ अनुसंधान जांच को व्यवस्थित रूप से जोड़ती है। विशिष्ट डिजाइन की खोज की यात्रा में विशिष्ट मात्रात्मक और गुणात्मक इनपुट के साथ विलय होता है, जहां डिजाइन संभव स्थानिक संभावनाओं के प्रस्तावों को खींचने के लिए वाहन है।

यह शोध रणनीति संबंधित स्थानिक डिजाइन विषयों जैसे कि शहरी डिजाइन और वास्तुकला पर लागू होती है। डिजाइन अनुसंधान और अनुसंधान-दर-डिजाइन

(अनुसंधान के अपने तरीकों सहित) के अनुसंधान डोमेन का विकास नए कार्यक्रमों को 'स्थान और समय' में नए कार्यक्रमों को एकीकृत करके और स्थानिक की निरंतरता के संबंध में महत्वपूर्ण है। परिदृश्य की गुणवत्ता और सांस्कृतिक पहचान। इस ढांचे के भीतर, एक परिदृश्य या परिदृश्य डिजाइन की औपचारिक रचना एक दुर्घटना या आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि एक विकास प्रक्रिया का परिणाम है।

सभी आकृति विज्ञान, तकनीकी, कार्यात्मक और सांस्कृतिक और पारिस्थितिक पहलुओं को उस रूप में व्यक्त

किया जाता है; परिदृश्य के रूप में अन्य सभी पहलू शामिल हैं और उनके संगठन की अभिव्यक्ति है। लैंडस्केप फॉर्म का ज्ञान इस हद तक और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि प्रोग्राम अधिक सामान्य, वैश्विक या अनिश्चित हो जाता है। फिर लैंडस्केप फॉर्म एक ऐसी चीज देता है, जो प्रक्रिया को 'चलाने' में सक्षम बनाता है और जगह के भौतिक गुणों में एक अंतर्दृष्टि के लिए परिवर्तनों का परीक्षण करने में सक्षम होने के लिए।

संदर्भ

1. रजौली शहर की जनगणना 2011 - बिहार "। www.census2011.co.in
2. "बिहार परमाणु ऊर्जा पर बड़ा दांव लगाता है; 3,000 मेगावाट का प्लांट"। द फाइनेंशियल एक्सप्रेस। PTII 27 जून 2017. 6 मार्च 2020 को लिया गया।
3. सिन्हा, एसबी; 2019 (4 अप्रैल 2020)। "नवादा का गौरवशाली अतीत है, लेकिन एक 'तनावपूर्ण' भविष्य"। द टाइम्स ऑफ़ इण्डिया। 6 मार्च 2020 को लिया गया।
4. गुप्ता, आलोक (4 जुलाई 2015)। "बिहार फास्ट-ट्रैक परमाणु ऊर्जा संयंत्र"। www.downtoearth.org.in 6 मार्च 2020 को लिया गया।
5. " राजौली का मानचित्र मौसम और वास्तुकला "। (<http://environmentclearance.nic.in/>)
6. जिला प्रोफाइल रजौली
7. फ्रायलिंग, सी। (1993) 'इनटू, थ्रू एंड द रिसर्च: रिसर्च इन आर्ट एंड डिजाइन', रॉयल कॉलेज ऑफ़ आर्ट रिसर्च पेपर्स, वॉल्यूम। 1, नंबर 1, पीपी। 1-5।
8. गोब्ले, PH, नासाउर, JI और नादेनिसक, डीजे (2010) 'लैंडस्केप जर्नल और लैंडस्केप आर्किटेक्चर में छात्रवृत्ति: अगले 25 साल', लैंडस्केप जर्नल, वॉल्यूम। 29, नंबर 1, पीपी.52-57।